then there would not be any chaos anywhere. Discipline is the backbone of the na unity. Discipline is the backbone of the na unity. Ci en of disciplined na can work more smoothly and are filled with the spirit of unity, brotherhood and co-opera

However, discipline does not mean strictly, the withdrawal of personal liberty and authority, on the other hand it provides one with the guideline to use its freedom in a right manner. But that too is possible only if they do not take law in their own hands. Anywhere we go, discipline is necessary in any ins whether it is or even in social life and even while si in our own house. But unfortunately we note that discipline in our schools and college has been perished. Students do not show respect to their teachers, misbehave in the classroom and even they try to take law in their hands. So an atmosphere of indiscipline is created which is great setback not only to the individuals but to the na also.

Discipline is important even in domes life. If Children are growing up in an atmosphere of love and brotherhood, they tend to be good ci ens. It is the duty of parents to nourish their children in an atmosphere conducive for everybody. So, in today's society, it is very essen to live with co-opera and brotherhood amongst each other. Absence of Discipline may lead to failure and backwardness of na on. But one can overcome these problems if everyone follows a personal code of conduct and maintain self-discipline for prosperity of the na

मूल्यांकन

विजेन्द्र कुमार
एकेडमिक इंचार्ज

इस संसार का यह विचित्र नियम है कि बाजार में वस्तुओं की कीमत दूसरे लोग निर्धारित करते हैं। पर मनुष्य अपना मूल्यांकन स्वयं करता है और वह अपना जितना मूल्यांकन करता है, उससे अधिक सफलता उसे कदापि नहीं मिल पाती है। प्रत्येक व्यक्ति को, जो जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तथा आगे बढ़ने की आकांक्षा रखते हैं, उन्हें यह मानकर चलना चाहिए कि परमात्मा ने उसे मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर भेजते समय उसकी चेतना में समस्त संभावनाओं के बीज डाल दिए हैं। इतना ही नहीं, उसके अस्तित्व में सभी संभावनाओं के बीज डालने के साथ–साथ उनके अंकुरित होने की क्षमताएँ भी भर दी हैं। लेकिन प्रायः देखने से यह प्रतीत होता है कि अधिकांश व्यक्ति अपने ही प्रति ही अविश्वास से भरे होते है तथा उन क्षमताओं और संभावनाओं के बीजों को विकसित तथा अंकुरित करने की चेष्टा तो दूर रही, उनके संबंध में विचार तक नहीं करना चाहते।

आत्मविश्वासी भाग्य को अपने पुरूषार्थ का दास समझता है तथा उसे अपना इच्छानुवर्ती बना लेता है। इसके लिए आवश्यकता केवल इस बात की है कि उचित मूल्यांकन किया जाए और आत्मविश्वास को सुदृढ़। यदि अपना उचित मूल्यांकन किया जाए तो वह निष्कर्ष अपनी प्रतिभा का स्पर्श पाते ही जीवंत हो उठता है तथा व्यक्ति बड़ी से बड़ी कठिनाईयों को लाँघ जाता है।

स्मरण रखा जाना चाहिए और विश्वास किया जाना चाहिए कि इस संसार में मनुष्य के लिए न तो कोई वस्तु या उपलब्धि अलभ्य है तथा न ही कोई व्यक्ति किसी प्रकार अयोग्य है। अयोग्यता एक ही है और वह है अपने आप के प्रति अविश्वास। यदि अपना उचित मूल्यांकन किया जाए तो कोई भी बाधा मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती।

School Song

संस्कार भारती श्री शक्ति,
विद्यालय यह शिक्षा ज्योति।
उज्ज्वल भविष्य संकल्पित पथ,
गढ़ता नित नवभारत मोती ।
संस्कार भारती श्री शक्ति,
विद्यालय यह शिक्षा ज्योति।।

साधन सुविधा अर्जन सृजन,
सुवासित होवे हर बचपन।
लय से लक्ष्य पे सदा बढ़ना,
तेजस्वी बन मंजिल पाना।
संस्कार भारती श्री शक्ति,
विद्यालय यह शिक्षा ज्योति।।

हम ग्रामीण देश के गौरव है,
तकदीर भारती सौरभ हैं।
संस्कार संजीवनी विद्या बल,
हर बालक शिक्षित भारत बल ।।
संस्कार भारती श्री शक्ति,
विद्यालय यह शिक्षा ज्योति।।

शिक्षा ज्ञान शक्ति संधान करे,
जीवन, क्षण, युग पहचान करें।
विजयाशीष सदा गुरुबल का,
संस्कार भारती ग्लोबल का।
संस्कार भारती श्री शक्ति,
विद्यालय यह शिक्षा ज्योति।।